भारतीय परम्परा™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-४, अंक-३७, जुलाई-२०२४

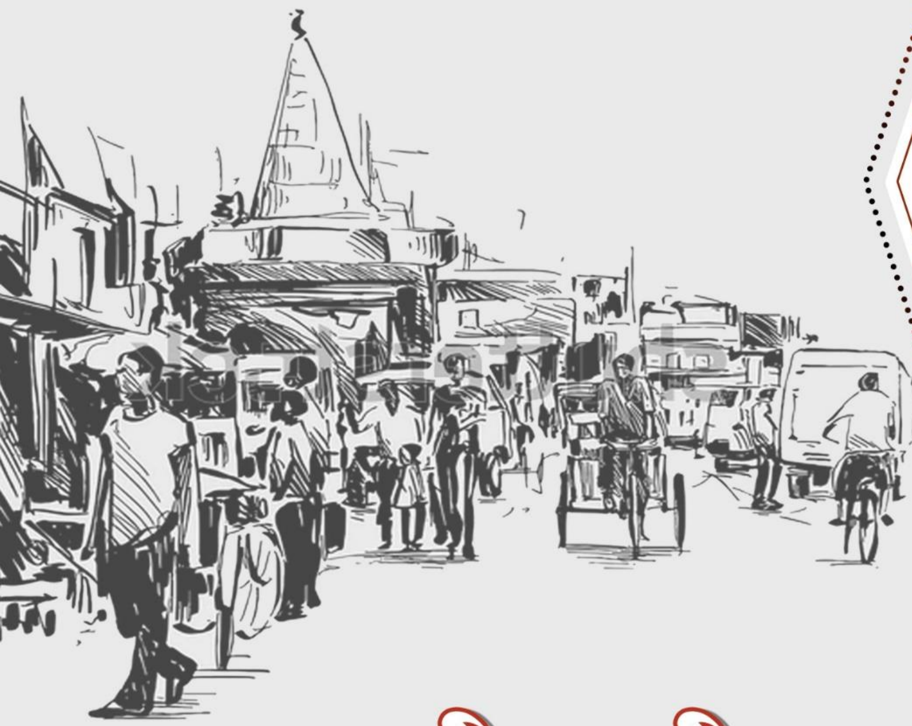

चलते रहने का नाम है 'जिंदगी'

www.bhartiyaparampara.com

भारतीय परम्परा™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-४, अंक-३७, जुलाई-२०२४

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

सोशल कनेक्शन

हमसे जुड़ने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com
paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

साका कैलेण्डर-१९४५, विक्रम संवत-२०८१, अयान-उतरायण, ऋतु-वर्षा

सोम	01 आषाढ कृ. दशमी	08 आषाढ शु. तृतीया	15 आषाढ शु. नवमी, गुप्त नवरात्रि समाप्त	22 श्रावण कृ. प्रतिपदा, श्रावण सोमवार व्रत, तिरंगा दिवस	29 श्रावण कृ. नवमी, श्रावण सोमवार व्रत
मंगल	02 आषाढ कृ. एकादशी, योगिनी एकादशी व्रत	09 आषाढ शु. चतुर्थी, विनायक संकष्टी चतुर्थी	16 आषाढ शु. दशमी	23 श्रावण कृ. द्वितीया	30 श्रावण कृ. दशमी
बुध	03 आषाढ कृ. द्वादशी, रोहिणी द्वादशी	10 आषाढ शु. पंचमी	17 आषाढ शु. एकादशी, देवशयनी एकादशी व्रत	24 श्रावण कृ. तृतीया	31 श्रावण कृ. एकादशी, कामिका एकादशी व्रत
गुरू	04 आषाढ कृ. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्रि	11 आषाढ शु. षष्ठी, स्कंद षष्ठी	18 आषाढ शु. द्वादशी	25 श्रावण कृ. चतुर्थी/पंचमी	
शुक्र	05 आषाढ कृ. चतुर्दशी/ अमावस्या	12 आषाढ शु. सप्तमी	19 आषाढ शु. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत	26 श्रावण कृ. षष्ठी	
शनि	06 आषाढ कृ. अमावस्या/ प्रतिपदा, गुप्त नवरात्रि आरंभ	13 आषाढ शु. अष्टमी	20 आषाढ शु. चतुर्दशी	27 श्रावण कृ. सप्तमी	
रवि	07 आषाढ शु. द्वितीया, जगन्नाथ रथयात्रा	14 आषाढ शु. अष्टमी, मासिक दुर्गाष्टमी	21 आषाढ शु. पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा व्रत	28 श्रावण कृ. अष्टमी, मासिक कृष्ण जन्माष्टमी	

कृ. - कृष्ण   शु. - शुक्ल

हिंदू धर्म में नवरात्रि का त्योहार अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, गुप्त नवरात्रि का भी विशेष महत्व है। **गुप्त नवरात्रि को तंत्र-मंत्र की सिद्धि के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है।** इन नौ दिनों में माँ दुर्गा की विधि-विधान से पूजा की जाती है और देवी के विभिन्न रूपों की आराधना की जाती है, जिससे साधक शक्ति प्राप्त कर सकें।

गुप्त नवरात्रि की पूजा दो मुख्य तरीकों से की जाती है: सात्विक और तांत्रिक। सात्विक पूजा में ध्यान, मंत्र जाप और हवन शामिल होते हैं। साधक अपनी साधना में एकाग्रता और पवित्रता बनाए रखते हैं। **दूसरी ओर, तांत्रिक पूजा में विशेष तांत्रिक विधियों और मंत्रों का उपयोग किया जाता है।** इन विधियों का उद्देश्य देवी दुर्गा को प्रसन्न करना और विशेष तांत्रिक सिद्धियों को प्राप्त करना होता है।

गुप्त नवरात्रि में माँ दुर्गा की दस महाविद्याओं की पूजा की जाती है। इनमें **माँ कालिके, तारा देवी, त्रिपुर सुंदरी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्तिका, त्रिपुर भैरवी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमला देवी शामिल हैं।**

माँ कालिके: तांत्रिक साधनाओं में अत्यंत शक्तिशाली मानी जाती हैं।

तारा देवी: सर्व सिद्धिकारक और मुक्ति की विधान रचती हैं।

त्रिपुर सुंदरी: समृद्धि की देवी हैं।

भुवनेश्वरी: सृष्टि की ऐश्वर्य स्वामिनी हैं।

छिन्नमस्तिका: भक्तों के सभी कष्टों का निवारण करती हैं।

त्रिपुर भैरवी: तमोगुण एवं रजोगुण से परिपूर्ण हैं।

धूमावती: शत्रुओं का संहार करती हैं।

बगलामुखी: शत्रुओं का नाश करती हैं।

मातंगी: वाणी और संगीत की अधिष्ठात्री हैं।

कमला देवी: धन संपदा की अधिष्ठात्री हैं।

गुप्त नवरात्रि का समय साधकों के लिए आत्म-शुद्धि और शक्ति प्राप्ति का समय होता है, पूजा और साधना से साधक अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव और अद्वितीय शक्तियों को प्राप्त कर सकते हैं। गुप्त नवरात्रि का पर्व हर साधक के लिए एक विशेष अवसर है, जिससे वे अपनी साधना और भक्ति के माध्यम से आत्मिक, मानसिक और भौतिक स्तर पर उन्नति की दिशा में अग्रसर करते है।

जगन्नाथ पुरी रथयात्रा, हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण और भव्य त्योहार है, जो हर साल ओडिशा के पुरी में मनाया जाता है। इस यात्रा के केंद्र में तीन विशाल और भव्य रथ होते हैं, जिनमें **भगवान जगन्नाथ, उनके भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा** विराजमान होते हैं। इन रथों की कई विशेषताएँ हैं, जो उन्हें अनूठा और पवित्र बनाती हैं।

रथों के नाम और स्वरूप –

1. भगवान जगन्नाथ का रथ (नंदिघोष):

- यह रथ सबसे बड़ा और भव्य होता है।
- इसकी ऊंचाई लगभग 45 फीट होती है।
- इस रथ में 16 पहिए होते हैं।
- इसे लाल और पीले कपड़े से सजाया जाता है।
- रथ पर गरुड़ का प्रतीक अंकित होता है।

2. बलभद्र का रथ (तालध्वज):

- यह रथ भगवान जगन्नाथ के रथ से थोड़ा छोटा होता है।
- इसकी ऊंचाई लगभग 44 फीट होती है।
- इस रथ में 14 पहिए होते हैं।
- इसे लाल-हरे कपड़े से सजाया जाता है।
- रथ पर शंख का प्रतीक अंकित होता है।

3. सुभद्रा का रथ (दर्पदलन):

- यह रथ सबसे छोटा होता है।
- इसकी ऊंचाई लगभग 43 फीट होती है।
- इस रथ में 12 पहिए होते हैं।
- इसे लाल-काले कपड़े से सजाया जाता है।
- रथ पर कमल का प्रतीक अंकित होता है।

निर्माण और सजावट –

लकड़ी का उपयोग: रथों का निर्माण विशेष प्रकार की लकड़ी से किया जाता है, जिसे हर साल ओडिशा के जंगलों से लाया जाता है और उतने ही पेड़ हर साल लगाए भी जाते है।

हस्तनिर्मित सजावट: रथों की सजावट में हस्तनिर्मित कपड़े, पेंटिंग्स और विभिन्न प्रकार की कलाकृतियों का उपयोग किया जाता है।

पवित्र रस्में: रथ निर्माण के दौरान कई पवित्र रस्में और अनुष्ठान किए जाते हैं, ताकि रथों को आध्यात्मिक ऊर्जा मिल सके।

धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व –

भक्ति और समर्पण: रथों को खींचने का काम भक्त स्वयं करते हैं, जो इसे भगवान के प्रति अपनी भक्ति और समर्पण का प्रतीक मानते हैं।

तीन रथों की यात्रा: तीनों रथ जगन्नाथ मंदिर से गुंडिचा मंदिर तक की यात्रा करते हैं, जो लगभग 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

धार्मिक प्रतीक: प्रत्येक रथ भगवान के विभिन्न स्वरूपों और प्रतीकों का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे उनकी महिमा और शक्ति का बोध होता है।

जनभागीदारी: रथयात्रा में लाखों श्रद्धालु भाग लेते हैं, जिससे यह सामूहिक भक्ति और एकता का प्रतीक बन जाता है।

सांस्कृतिक प्रदर्शन:

रथयात्रा के दौरान संगीत, नृत्य और लोक कलाओं का प्रदर्शन किया जाता है, जिससे भारतीय संस्कृति की विविधता और समृद्धि का प्रदर्शन होता है।

जगन्नाथ पुरी रथयात्रा में रथों की इन विशेषताओं से यह स्पष्ट होता है कि यह पर्व धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। **यह यात्रा न केवल भक्ति का प्रतीक है, बल्कि भारतीय संस्कृति और परंपराओं का जीवंत उदाहरण भी है।**

WWW पूरा पढ़े

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

भारतीय परम्परा

की माला में पिरोना

चाहते है तो हमे सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट

पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

आस्था और कौतूहल का संगम - जाख का अग्नि नृत्य

गोठी की परम्परा केदार घाटी के उन 14 गाँवों में प्रचलित है जो श्री केदारनाथ धाम के सबसे नजदीकी गाँव है। इन 14 गांवों के इष्ट देवता हैं - जाख राजा। जाख राजा को जल एवं अग्नि का देवता माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि क्षेत्र में वर्षा, आँधी आदि से कोई अनिष्ट न हो, ऐसी कामना से इस अनुष्ठान का आयोजन किया जाता है। **स्थानीय लोग बताते हैं कि सम्वत 1111 से यह आयोजन होता आया है।** प्रतिवर्ष 2 गते वैशाख को सम्पन्न होने वाले इस आयोजन को **"गोठी (गोष्ठी)"** कहा जाता है। गोठी से पूर्व देवशाल, कोठेडा तथा नारायण कोठी के ग्रामीणों द्वारा एक अग्नि कुण्ड तैयार किया जाता है। इस आयोजन को देखने के लिए दूर-दूर से लोगों का हुजूम यहां आने से यह आयोजन मेले का स्वरूप ले लेता है, जिसे **"जाख मेला"** कहा जाता है।

गोठी का यह अनुष्ठान मुख्य रूप से चार दिन चलता है। इस दौरान **जाख मेले में घण्टे-घड़ियाल बजाना व उपरोक्त तीन गाँवों में गुलाब तोड़ना वर्जित है।** तीन दिनों तक इन गाँवों के प्रत्येक परिवार का एक-एक सदस्य सामूहिक रूप से गाजे-बाजों के साथ जंगल से नंगे पाँव बाँज की लकड़ियां लाते हैं, जिसे **"मूनी काटना"** कहते हैं।

वैशाख संक्रांति को श्री विन्ध्यवासिनी मन्दिर देवशाल से जाख देव की उत्सव मूर्ति भव्य शोभा यात्रा के साथ जाखधार मन्दिर पहुँचती है। जाखधार वह स्थान है जहाँ यह आयोजन होता है। वैशाख संक्रांति को मन्दिर परिसर के अग्निकुंड में जलाने के लिए लकड़ी के गेलों (काष्ठ खण्डों) का चयन विधि-विधान से किया जाता है। अग्नि कुण्ड में 11 लकड़ियां लम्बाई तथा 11 लकड़ियां चौड़ाई में वर्गाकार बिछाई जाती हैं। इन लकड़ियों की लम्बाई 6-7 फुट होती है। लकड़ियों का यह ढेर 20 फुट तक ऊँचा होता है। संक्रांति की रात 9 से 10 बजे के मध्य मुहूर्त अनुसार लकड़ियों के इस ढेर की विधि-विधान से पूजा-अर्चना कर, रिंगाल की लकड़ी द्वारा अग्नि प्रज्वलित की जाती है।

2 गते वैशाख को अपराह्न 2 से 3 बजे के मध्य रात भर जलाई गई इन लकड़ियों से बने धधकते अंगारों में, जाख का नर पश्वा इन धधकते अंगारों के ढेर में प्रवेश कर, इसे पार कर दूसरी तरफ पहुंचता है।

दूर-दूर तक पहुँच रही आग की हल्वांर (अंगारों की ज्वाला/गर्मी) से दर्शक इस कुण्ड के नजदीक ठहरना तो दूर, जाने में भी घबराते हैं। तब किसी **देव पश्वा के रूप में इस कुंड में किसी मानव का प्रवेश, नास्तिक से नास्तिक व्यक्ति के मन में भी आस्था जगा देता है।** हमारे वेद-पुराणों में वर्णित है कि हवन-यज्ञ के द्वारा प्रकृति की अनंत शक्तियों के मध्य सामंजस्य एवं संतुलन स्थापित करके ब्रह्माण्डीय ऊर्जा को विस्तारित एवं संतुलित किया जाता है। सामवेद के मंत्रों की संगीतमय ध्वनि एवं निर्धारित शब्दों की आवृत्ति मुक्त निश्चित क्रम के स्पंदनों से साधक का मस्तिष्क पूर्णतः एकाग्र हो जाता है। **साधक की यही एकाग्रता उसे बड़े से बड़े असम्भव कार्यों को करने की प्रेरणा एवं शक्ति देती है।** ऐसा ही कुछ इस आयोजन में भी देखा जा सकता है।

हमारी धार्मिक आस्था और विश्वास कहीं न कहीं हमें संदेश देती है कि भले ही हम दिनों दिन विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति कर रहे हैं लेकिन अभी तक हम आस्था के पीछे की ताकत का रहस्य नहीं खोल पाये हैं। हमें विज्ञान पर भरोसा करते हुए अपनी धार्मिक आस्थाओं और रहस्यों की तह तक पहुंचने के लिए वैज्ञानिक कसौटियों पर कसते हुए, आगे बढ़ने के लिए एक लम्बी यात्रा पूरी करनी है।

- **हेमंत चौकियाल जी, रूद्रप्रयाग (उत्तराखंड)**

गत माह की पत्रिका में कुछ गलतियाँ थीं, जिन्हें सही समय पर सुधार लिया गया था। हमारी टीम को इन त्रुटियों की जानकारी देने के लिए हम आप सभी सम्मानीय पाठकों का आभार व्यक्त करते हैं। विशेष रूप से **श्री सत्यम मिश्रा जी, श्री मनोज कुमार जी, और श्री S.P. गोयल जी** का धन्यवाद, जिन्होंने हमें इन गलतियों पर ध्यान दिलाया।

भारतीय परम्परा की टीम आपके इस सहयोग के लिए हृदय से आभारी है। हम आपके समर्थन और स्नेह के लिए कृतज्ञ हैं और उम्मीद करते हैं कि आप भविष्य में भी हमें ऐसे ही मार्गदर्शन देते रहेंगे।

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
नियमित प्राप्त करने हेतु हमें सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- भारतीय परम्परा ई-पत्रिका के लिए दिए गए नंबर **7303021123** को मोबाइल में सेव करें और व्हाट्सप्प एवं टेलीग्राम के ग्रुप से जुड़े।

- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुए है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

सोचिए जरा .... ?

आधुनिक तो हो गए,
मगर संस्कार पीछे छूट गए,
सोचिए जरा ...
बुलंदी तो मिल गयी,
मगर परिवार पीछे छूट गए,
सोचिए जरा.....
रहने के लिए मकान तो मिल गए,
लेकिन घर हमारे टूट गए
सोचिए जरा.....
झूठ बोलकर आप तो खुश हुए,
मगर संबंध फिर टूट गए ,
सोचिए जरा....
कारखाने तो लगा लिए जमीन पर,
जंगल सारे कट गए,
सोचिए जरा...
सागर की गहराई तो बहुत हैं,
मगर पीने को पानी नहीं हैं,
सोचिए जरा ....
कितना तालमेल था प्रकृति से पहले,
जल, जंगल, जमीन उजाड़कर क्या
मिला,
सोचिए जरा.........।

- डॉ. किशोर कुमार जी, धौलपुर (राजस्थान)

फिर स्कूल खुले अहा!
(बाल कविता)

सुनो माँ फिर से अब तो, खुले सभी स्कूल।
माँ मेरी है ड्रेस कहाँ पर,
ढूँढ़ो बैग किताबें।
टाई बैल्ट कहाँ रखी हैं, जूते और जुराबें।
कुछ अच्छा चटपटा बनाकर,
लंच बॉक्स में रखना।
कैसा बना जानने को माँ,
पहले तुम ही चखना।
पढ़ा पढ़ाया था जो कुछ भी,
सभी गया हूँ भूल।
अहा! सुनो माँ फिर से अब तो,
खुले सभी स्कूल॥
फिर से प्यारे दोस्त मिलेंगे,
कक्षा पुन: सजेगी।
तरस गये हैं कान वही फिर,
टन-टन बेल बजेगी।
सर मैडम से फिर कक्षा में,
पाठ पढ़ेंगे अपना।
अभी अधूरा छूट गया था, पूर्ण करेंगे सपना।
बंद रहे स्कूल अभी तक,
उड़ी फील्ड में धूल।
अहा! सुनो माँ फिर से अब तो,
खुले सभी स्कूल।

- श्याम सुन्दर श्रीवास्तव जी, रावगंज, कालपी, जालौन (उत्तर प्रदेश)

तिरंगा हमारा

बच्चों तुम कर लो जयकारा,
है प्यारा तिरंगा हमारा।
'वंदेमातरम्' का कर घोष,
मिलता है हमको संतोष।
झूम तिरंगा जब लहराए,
मन उल्लास से भर जाए।
करें शहीदों का वंदन,
मातृभूमि को करें नमन।
एकता का संदेश फैलाएँ,
खुशहाली से देश सजाएँ।
इस तिरंगे पर जां कुर्बान,
मेरा प्यारा हिन्दुस्तान॥

- डॉ. अखिलेश शर्मा जी, इन्दौर (म.प्र.)

जुगनू

एक बात बताओ दादी माँ
जुगनू क्यों रात में आता है?
उसकी मम्मी ने गुस्से में
क्या उसको घर से निकाला है?
मैं तो अँधेरे से डरता हूँ
जुगनू भी क्या डरता होगा?
गोलू की बातें सुनकर
दादी माँ बोली
जुगनू रात में आता है
वह अँधेरे को मिटाता है
खुद को जलाकर भी
दुनिया को रोशनी देता है
वह अपने दुःख को भूलकर
सबको सुख देता है
यही संदेश बाँटने वह
रोज रात को आता है।

-अखिलेश कुमार मौर्य जी, सोनभद्र (उ. प्र.)

WHITE BERRY
RESIDENCY
Find a Perfect
HOME
For Your Family
READY TO SHIFT
1, 2 BHK & Jodi Flats
Limited Flats Available
www.whiteberryresidency.com
Asha Nagar, Thakur Complex, Kandivali (E), Mumbai.
98705 80810
85913 69996

Shree Ganeshay Namah
GAATHBANDHAN
Kings weds Queens
PAPER LESS
&
SHIPPING
FREE
WEDDING
INVITATION
CALL US
www.kingswedsqueens.com

आओ ! कुछ गीत उगाएं

पावस के इस मौसम में –
आओ ! कुछ गीत उगाएं ।
भावों के इन गमलों में हम –
शब्दों के कुछ बीजों को बोएं ।
ऋत बहुत उर्वरा है बंधु !
समय तनिक भी हम न खोएं ।
मधुमिलन के इस मौसम में –
आओ ! कुछ मीत बनाएं ।
शुष्क उरों को सींच प्यार से –
फसल प्यार की हम उगाएं ।
हरिया जाएं मरु हृदय भी –
हरियाली का पर्व मनाएं ।
मेघों के इस मौसम में –
आओ ! कुछ प्रीत जगाएं ।
चाहे कितने भी स्याह हों दिन –
छुपा हो सूरज बादल में ।
मांगकर उजियारा लाना होगा –
जुगनुओं से अपने आंचल में ।
मावस के इस मौसम में –
आओ ! कुछ दीप जलाएं ।
नैनों ही नैनों में नैनों से –
नैनों को नैनों की पाती लिखें ।
नैनों ही नैनों में नैनों से –
नैनों को लिखी पाती बांचें ।
कजरारे इस मौसम में –
दीठों से दीद बचाएं ।

– अशोक आनन जी, मक्सी, (म.प्र.)

तुम भरे हो नीर जैसे

मन कलश रीता कहाँ है
तुम भरे हो नीर जैसे।
कौन कर पाए विलग भी
हम बँधे जंज़ीर जैसे॥
प्रार्थना के हर चरण में
कह रहा अपनी कथा को।
दीर्घता कह हर दिवस की
कह रहा रजनी-व्यथा को।
मन विहग घायल हुआ है
तुम धँसे हो तीर जैसे।
मन कलश रीता कहाँ है
तुम भरे हो नीर जैसे॥
प्राण दीपक झिलमिलाता
धारता है धारणा को।
साँस घंटा घनघनाता
साधता है साधना को।
चाह तेरी बढ़ रही है
द्रौपदी के चीर जैसे।
मन कलश रीता कहाँ है
तुम भरे हो नीर जैसे॥
चाह होती देख लूँ बस
देख लूँ तो मैं मिलूँ भी।
मैं मिलूँ तो मैं खिलूँ भी
जो खिलूँ तो मैं जिऊँ भी।
देखना यह और मिलन है
पर्वतों के पीर जैसे।
मन कलश रीता कहाँ है
तुम भरे हो नीर जैसे॥

– त्रिलोकी मोहन पुरोहित, राजसमन्द (राज.)

324. बाण शय्या पर पड़े पितामह भीष्म ने कब अपने शरीर का परित्याग किया...?

- दक्षिणायन के समाप्त होने और सूर्य के उत्तर मार्गी होने पर माघ माह के शुक्ल पक्ष की अष्टमी को पितामह भीष्म ने अपनी देह का परित्याग किया।

325. कितने दिनों तक भीष्म बाण शय्या पर रहे...?

- अट्ठावन दिनों तक।

326. भीष्म को किन-किन नामों से जाना जाता है...?

- गंगापुत्र, गांगेय, शांतनु सुत, नदीज, तालकेतु, परावसु, देवव्रत, पितामह ।

(भीष्म के देह त्याग के साथ ही महाभारत के तेरहवें पर्व, अनुशासन पर्व का समापन होता है। अगला पर्व है: आश्वमेधिक पर्व)

327. अश्वमेध यज्ञ क्या होता है...?

- प्राचीन काल में यह यज्ञ शक्ति सम्पन्न रा-जा द्वारा करवाया जाता था। यह यज्ञ, राजा की शक्ति व समृद्धि का प्रतीक होता था। अनुष्ठान की प्रक्रिया के दौरान एक अश्व को, उसके सिर पर एक जयपत्र लिखकर छोड़ दिया जाता था। घोड़ा जिस-जिस राज्य से होकर गुजरता उस-उस राज्य को, यज्ञकर्ता राजा की अधीनता स्वीकार करनी होती थी। अधीनता स्वीकार न करने वाला राजा, अश्व को बंदी बना लेता था। तब यज्ञकर्ता राजा द्वारा अश्व को पकड़ने वाले राजा को युद्ध में हरा कर यज्ञ अश्व को छुडवाया जाता था। अश्व भ्रमण के साथ राजा की विशाल सेना रहती थी। अश्व के सकुशल लौट आने पर ही यज्ञ सम्पन्न होता था और यज्ञकर्ता राजा को चक्रवर्ती अर्थात संपूर्ण भूमि का अधिपति मान लिया जाता था। यज्ञ के दौरान ब्राह्मणों, साधू-महात्माओं व जरूरतमंदों को बड़ी मात्रा में दान-दक्षिणा दी जाती थी।

328. युधिष्ठिर द्वारा अश्वमेध यज्ञ के घोड़े की रक्षा का भार किसे सौंपा गया...?

- अर्जुन को।

329. मणिपुर राज्य में अर्जुन का सामना किससे हुआ...?

- बभ्रुवाहन से । बभ्रुवाहन मणिपुर का राजा था। जो कि चित्रांगदा और अर्जुन का ही पुत्र था। वनवास काल के दौरान अर्जुन और चित्रांगदा की मुलाकात और विवाह हुआ। विवाह की शर्त के अनुसार चित्रांगदा और उसका पुत्र बभ्रुवाहन, मणिपुर राज्य में ही रहे।

330. अर्जुन-बभ्रुवाहन युद्ध का क्या परिणाम रहा...?

- इस युद्ध में पुत्र बभ्रुवाहन के हाथों पिता अर्जुन मारा गया।

331. अर्जुन को पुनर्जीवित किसने किया...?

- नाग कन्या उलूपी ने संजीवन मणि से अर्जुन को पुनर्जीवित किया। उलूपी अर्जुन की चौथी पत्नी थी। ज्ञातव्य रहे कि वनवास प्रवास के दौरान अर्जुन का नागों से युद्ध हुआ, उस दौरान उनका नाग कन्या उलूपी से विवाह हुआ।

332. अर्जुन के कितनी पत्नियां थी...?

- चार, कृष्ण की बहन सुभद्रा, द्रुपद कन्या द्रौपदी, मणिपुर राज्य की राजकुमारी चित्रांगदा व नाग कन्या उलूपी।

(अनुशासन पर्व की भांति आश्वमेधिक पर्व के अधिकांश हिस्से में भी धर्मोपदेश की अनेकानेक कथाएं, व्याख्यान शामिल है जो महर्षि व्यास व भगवान श्रीकृष्ण द्वारा महाराज युधिष्ठिर, अर्जुन व अन्य पांडवों को सुनाई जाती है। भगवान श्रीकृष्ण के हस्तिनापुर से द्वारका गमन के साथ ही आश्वमेधिक पर्व समाप्त होता है। अगला पर्व आश्रमवासिक पर्व है)

333. कौरवों के सम्पूर्ण विनाश के बाद धृतराष्ट्र व गांधारी का क्या हुआ...?

- महाराज युधिष्ठिर ने धृतराष्ट्र व गांधारी को ससम्मान अपने साथ हस्तिनापुर के महलों में रखा। पाण्डव, सच्चे मन से सेवा में संलग्न रहते, कुंती व द्रौपदी सहित दूसरी पांडव वधुएँ भी गांधारी का सदैव आदर करती हुई उनकी सेवा में उपस्थित रहती। विदुर, संजय, युयुत्सु व कृपाचार्य को पांडवों की राजसभा में यथा सम्मानजनक स्थान दिया गया। ज्ञातव्य रहे कि धृतराष्ट्र व भीमसेन के संबंधों में कभी सहजता न हो पायी।

334. महाभारत युद्ध के कितने वर्षों पश्चात धृतराष्ट्र हस्तिनापुर छोड़कर वन प्रवास को गये...?

- पन्द्रह वर्षों तक धृतराष्ट्र व गांधारी ने पांडवों के संग हस्तिनापुर महल में निवास किया ।

335. धृतराष्ट्र-गांधारी को वन गमन की अनुमति युधिष्ठिर ने कैसे दी..?

- वनगमन का निश्चय जान युधिष्ठिर शोक से ग्रस्ति हो गये और अनुमति देने में असमर्थता व्यक्त की तो महर्षि व्यास ने कहा- "तुम इनके शुभ कार्य में विघ्न न डालों। राजर्षियों का यह परम धर्म है कि युद्ध या वन में उनकी विधिपूर्वक मृत्यु हो। अब इनके तप करने का समय है, अत: तुम इनको वन में जाने की अनुमति प्रदान कर दो" ।

(क्रमश: अगले माह)

- माणक चन्द सुथार जी, बीकानेर (राज.)

सपने वो नहीं होते
जो सोते वक्त आते हैं,
सपने वो होते हैं जो
आपको सोने नहीं देते।

समय की कद्र करो,
यह एकमात्र ऐसा
संसाधन है जो
एक बार चला गया तो
फिर वापस नहीं आता।

जो सपने देखते हैं,
वही उन्हें पूरा करने का
साहस रखते हैं।

संघर्ष जितना कठिन
होगा,
जीत उतनी ही
शानदार होगी।

हारना अस्थायी है,
लेकिन हार मान लेना
स्थायी है।
कोशिश करते रहो।

सफलता की कहानियाँ
मत पढ़ो,
उनसे केवल संदेश लो।

असफलता की कहानियाँ
पढ़ो और उनसे सीखो।

स्थानीयता को मजबूती प्रदान करना हम सबका फर्ज

आप सभी जानते ही हैं कि हमारे देश के अलावा भी विश्व के अनेक देशों में इस बार गर्मी का भयंकर दौर देखने को मिला है। चूँकि तापमान लगातार बढ़ता ही जा रहा है जिसके चलते हमारे देश में अभी भी कई राज्य लू की चपेट में हैं।

मौसम जानकारों का मानना है कि बदलता मौसम गर्मी के प्रकोप को और ज्यादा बढ़ाने का काम करेगा जिसके चलते आने वाले समय में स्थिति और खराब होने की सम्भावना है। इस बीच बड़े-बुजुर्ग यह भी बता रहे हैं कि इस साल गर्मी ने सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं।

अब जब आप इतनी भीषण गर्मी में बाज़ार निकलते हैं तो देखते होंगे कि आपको को गर्मी और धूप से बचाने के लिये शामियाने लगे हुए हैं और वहाँ बैठने के लिये कुर्सियाँ भी रखी गयी हैं। कुछ जगहों पर तो विश्राम करने के लिये खाट भी रखे हुए मिलेंगे। लेकिन इन सब जगहों के अलावा भी बाजार क्षेत्र में जगह-जगह पर ठंडे पानी की व्यवस्था की गई मिलेगी।

आपके ध्यानार्थ यह सब व्यवस्था **"स्थानीय दुकानदारों"** ने बिना किसी भी प्रकार की सरकारी सहायता के आपसी चन्दा इकट्ठा कर, मिलकर की हुई होती है। साथ-साथ इस तरह की व्यवस्था में लेशमात्र भी भेद-भाव की गुंजाईश नहीं रखते हैं अर्थात किसी भी जाति का हो, छोटा हो या प्रौढ़, औरत हो या पुरूष सभी इस व्यवस्था से लाभान्वित होते हैं।

इतना ही नहीं धूप में आपकी गाड़ी की सीट गर्म हो गई हो तो सीट को ठंडा करने के लिए पानी भी यही **"स्थानीय दुकानदार"** निःसंकोच देता है। राह चलते किसी राहगीर की तबीयत खराब हो गई हो तो उसको पंखा-कूलर-एसी की शीतल छाया में बैठने या अस्पताल तक पहुंचाने की व्यवस्था भी यही **"स्थानीय दुकानदार"** करता है।

उपरोक्त के अलावा, किसी भी दुकान में प्रवेश करते ही आपको सम्मान के साथ ठण्डे पानी, गन्ने का रस, नींबू पानी, लस्सी वगैरह को पूछने वाला भी यही **"स्थानीय दुकानदार"** ही होता है।

आपको किसी गली या प्रथम मंजिल तक

जाना हो तो भैया गाड़ी रख दूँ क्या? थोड़ा सा ध्यान रख लेना" ऐसा कहकर आपकी गाड़ी की मुफ़्त की पार्किंग और हिफाज़त का ज़िम्मा भी यही **"स्थानीय दुकानदार"** उठाता है।

जब आपको टैक्सी, रिक्शा या कैब वाले को भुगतान करना हो या ऑनलाइन खरीददारी का भुगतान करना हो तब छुट्टे पैसे/चेंज भी यही **"स्थानीय दुकानदार"** एक बार हल्की आनाकानी करने के बाद भी मुहैया करा देते हैं, भले ही बाद में उन्हें अपने धंधे में थोड़ी तकलीफ ही क्यों न उठानी पड़े।

उपरोक्त सभी पर विचार कर बतायें -

- बदले में आप क्या करते हैं ?

- आपको क्या करना चाहिये ?

- आपको क्यों करना चाहिये ?

रुमाल से लेकर साड़ी तक, चार्जर से लेकर लेपटॉप तक यहाँ तक कि दैनिक उपयोग की हर छोटी बड़ी ख़रीदारी भी आजकल हम और आप बेधड़क ऑनलाइन कर रहे हैं।

कृपया ध्यान दे लें, मैं ऑनलाइन ख़रीदारी के ख़िलाफ़ नहीं हूँ, मगर ऑनलाइन पर ही निर्भर हो जाना हर लिहाज से न भी हो तो कुछ लिहाज से तो अवश्य ही गलत है। यहाँ इतना ही निवेदन है कि अति आवश्यक वाले हालत को छोड़, हमें हमारे निकटतम स्थित स्थानीय बाजार से ही खरीददारी पर ध्यान देना चाहिये। मेरा मानना है कि हम सभी स्थानीय खरीददारी के लाभों से वाकिफ तो हैं लेकिन जरा से आलस्य के चलते ऑनलाइन ख़रीदारी कर लेते हैं, उसमें ही थोड़ी सुधार कर लेने की आवश्यकता है।

इसलिये ही इस रचना के माध्यम से मैं सभी से यही अनुरोध करता हूँ कि यदि आप स्थानीय बाजार से नहीं खरीदेंगे, तब इन **"स्थानीय दुकानदारों"** का धंधा ख़त्म हो जाएगा या एकदम मन्दा पड़ जायेगा। फिर उस हालात में आपको/हमको उपरोक्त अघोषित सेवाएं मिलनी भी बन्द हो जायेंगी।

इसलिए कोशिश करें स्थानीय व्यापार और व्यापारियों दोनों को जीवित रखें क्योंकि ये, वे लोग हैं जो सर्वशक्तिमान से केवल एक ही प्रार्थना करते हैं, वो है -

साईं इतना दीजिए,
जा में कुटुंब समाय ।
मैं भी भूखा न रहूं,
साधु ना भूखा जाय ॥

- गोवर्धन दास बिन्नाणी जी, 'राजा बाबू', बीकानेर (राज.)

सामग्री: एकदम पतली कटी हुई पत्ता गोभी 2 कप, अनानास के 4-5 स्लाइस, एक सलाद पत्तियों का गुच्छा, एक शिमला मिर्च, एक पका हुआ चुकंदर, 4 सैलरी स्टिक, स्वाद के लिए नमक, काली मिर्च और चीनी।

विधि: बंदगोभी को बहुत पतला काट लीजिए। सैलरी और शिमला मिर्च को भी काट लीजिए । सजावट के लिए एक स्लाइस को छोड़कर बाकी अनानास के टुकड़े कर लीजिए। बंदगोभी, सैलरी और शिमला मिर्च को 30 मिनट तक बर्फ के पानी में रखिए। परोसने से ठीक पहले बंदगोभी, अनानास के टुकड़े, सैलरी, शिमला मिर्च, चीनी और नमक मिलाइए। दो टेबलस्पून अनानास का सिरप डालिए। चुकंदर के स्लाइस काटिए, उसमें नमक और काली मिर्च डालिए। सलाद की पत्तियां बिछाकर उस पर सलाद रखिए। चुकंदर के स्लाइस से सजाकर और बीच में अनानास का एक स्लाइस रखिए, उसके ऊपर एक चेरी भी रखिए।

रेड कैबेज सलाद -

सामग्री: पतली लंबी कटी हुई लाल पत्ता गोभी - 1 कप, किशमिश - 10-15, विनेगरेट ड्रेसिंग - 2 टेबलस्पून

विधि: लाल पत्ता गोभी को 5 मिनट के लिए बर्फ के पानी में डालकर रखें। फिर गोभी का पानी निथार लें। इसमें किशमिश और विनेगरेट ड्रेसिंग मिलाएं। सलाद को तुरंत परोसें।

रसोई युक्तियां-

1- ढोकले में हमेशा कुनकुने पानी का ही इस्तेमाल करें। इससे ढोकला स्पंजी बनता है।

2- करेलों का कड़वापन दूर करने के लिए उन्हें खुरचकर सिरके में नमक और हल्दी का घोल लगाकर छोड़ दें। 1 घंटे बाद अच्छी तरह धो लें। कड़वापन खत्म हो जाएगा।

3- धनिया-पुदीने की चटनी बनाते समय उसमें पानी की बजाय बर्फ के टुकड़े डालकर पीसें। इससे चटनी कई दिनों तक हरी बनी रहेगी।

4- स्वादिष्ट और फूले हुए पौपकॉर्न बनाने के लिए उन्हें बनाने से कुछ समय पहले फ्रीजर में रख दें। फिर बनाएं, पौपकॉर्न अच्छे फूलेगे।

विविधा कुकिंग क्लासेस, पूनम राठी जी, नागपुर

नौ माह से अपने मन में बेटे की ख्वाहिश पाल रही स्वधा जैसे ही लेबर रुम से बाहर आयी तो बेटी को देख उसका अश्रु बांध फूट पड़ा जमाना बदल गया पर आज भी सोच का दायरा संकुचित है यह देख उसकी मौसी मन मसोस कर रह गई।

वहीं अस्पताल में दूसरी और बधाइयां बांटी जा रही थी जश्न मनाया जा रहा था दोनों स्थितियों के वातावरण को देखकर मौसी के मन में कल्पनाओं ने अपना मंथन प्रारंभ कर दिया मानव भी कितना भ्रमित जीवन जी रहा है जहां जिंदगी में पल का भरोसा नहीं वहां वह बेटे के हो जाने से अपने सुनहरे भविष्य के ताने-बाने बुनने में मशगूल हो जाता है।

आज के दौर में बेटा हो या बेटी कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता महत्त्वपूर्ण है तो वह है परवरिश क्यों की बीज जैसा बोया जाएगा फल वैसा ही मिलना है जिस बीज को अच्छे खाद पानी से सींचा जाता है खराब होने पर कीटनाशक डाला जाता है वह पेड़ अच्छे फल के साथ ही एक सुखद छांव भी देता है और जिस पेड़ की सही देखभाल नहीं होगी उससे मीठे फल प्राप्ति की कल्पना मात्र भ्रम है जिस तरह पौधों का स्वस्थ रहना बागवान के हाथ है वैसे ही बच्चों के भविष्य की बुनियाद को मजबूत करने में सर्वाधिक योगदान मां का होता है उनका भविष्य बनाने में कई बार उसे अपनी खुशियों को दांव पर लगाना पड़ता है, अपनी आदतें बदलनी पड़ती है **लेकिन जब चारों ओर यह बच्चे अपने कीर्ति का परचम लहराते हैं, अपनी काबिलियत से सितारों की तरह यह हर क्षेत्र में चमकते हैं तो सर्वाधिक रोशनी मां को ही मिलती है।**

मौसी स्वधा के पास बैठी सोच के समंदर में डूबी थी तभी डॉक्टर आयी और जांच करते हुए कहने लगी कल आपका चेकअप करने दूसरी डॉक्टर आएगी मुझे अपनी मम्मी को हैदराबाद चेकअप के लिए ले जाना होगा यह कह कर डॉक्टर तो चली गई लेकिन मौसी स्वधा से कहने लगी यह **महिला केवल सफल डॉक्टर ही नहीं एक कुशल बेटी और जिम्मेदार गृहिणी भी है** स्वधा का मातृत्व जाग उठा उसकी आंखों में बेटी के भविष्य को उज्जवल बनाने के सपने तैरने लगे।

- राजश्री राठी जी, अकोला (महाराष्ट्र)

बहुत पुण्य का उदय हुआ कि मानव के रूप में हम इस दुनिया में आए, लेकिन इस धरती पर हमारा जन्म किसी को कष्ट पहुँचाने के लिए नहीं हुआ है।

हम कितने ही ज्ञानी हो जाएं या धनवान हो जाएं लेकिन, हमारी वजह से किसी को कष्ट पहुँचता है, तो यह सब व्यर्थ है। असल में **दूसरों की मदद करने में ही हमें सच्ची खुशी प्राप्त हो सकती है।**

अगर हमने अपने जीवन में कोई दुश्मन बनाया है या किसी को परेशान किया है, तो हम कभी भी खुश नहीं रह सकते। अगर कोई व्यक्ति किसी को धोखा देता है या कष्ट देता है, तो जीवन के अंत में उसका कमाया हुआ सारा धन, ज्ञान और यश सब निरर्थक हो जाता है।

तभी तो कहा गया है कि **दूसरों की खुशी के लिए ख़ुद को समर्पित करने वाला व्यक्ति ही खुशहाल जीवन जीता है।**

सबकी खुशी में ही अपनी खुशी मानना ही जीवन में खुशहाली लाता है।

अतः जितना संभव हो सके हमें दूसरों की सेवा करनी चाहिए और अपने जीवन को सार्थक बनाने का प्रयास करना चाहिए।

जीवन में खुशहाली लाने के लिए दूसरों के जीवन का भी हमें पूरा सम्मान करना चाहिए। दूसरों की मदद करना अपने जीवन को खुशहाल बनाने का सबसे अच्छा तरीका है।

हमारे अन्दर ये सब भाव जागरूकता और अच्छी शिक्षा से आते हैं, इसलिए हमारी शिक्षा में नैतिक सिद्धांतों का होना अति आवश्यक है।

हे परमात्मा!
हमारे मन में दूसरों के प्रति प्रेम, मित्रता, सद्भावना, समर्पण और सबके प्रति हित की भावना हमेशा रहे, ताकि हम अपना जीवन पूरी तरह से खुशी से व्यतीत कर सकें।

सबका जीवन शांत और सुख से बीते, यही ईश्वर से प्रार्थना है।

धन्यवाद!!

- मधु अजमेरा जी, ग्वालियर (म. प्र.)

सुबह जल्दी 5 बजे उठ जाया करो क्योंकि 5.30 बजे दोबारा सोने पर और भी अच्छी नींद आती है। जनहित में जारी (अखिल भारतीय आलसी लोगों का संघ)

डॉक्टर : मैं आपको काफी दवाइयां दे चुका हूँ, लेकिन असर नहीं हुआ अब मैं दवा बदलकर देखता हूं,
रोगी : नहीं डॉक्टर साहब, अब मैं डॉक्टर बदलने की सोच रहा हूं..

खाना खाने के तुरंत बाद सोना नहीं चाहिए ! फिर? थोड़ी देर, Whatsapp चला लेना चाहिए..!

राष्ट्रीय बीमारी –
जी भारी लग रहा, राष्ट्रीय पक्षी मोर, राष्ट्रीय पशु बाघ...

राष्ट्रीय इलाज - थोड़ा आराम कर लो,
जी हल्का हो जायेगा..

असल भारतीय वो है जो फटी शर्ट भी यह सोच कर रख लेते हैं कि..
सर्दियों में स्वेटर के नीचे पहनेंगे..!

टीचर : मछलियां बोल क्यों नहीं सकतीं ?
पप्पू : पानी में मुंह डालकर आप देखो आवाज निकलेगी क्या?

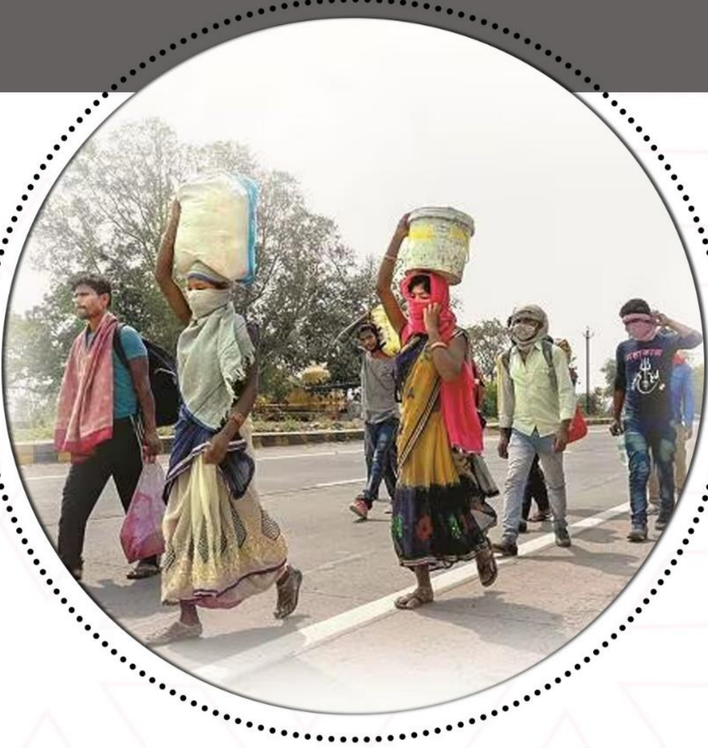

चलते रहने का नाम ही जिंदगी है। जिनको जिंदगी से शिकायत है वे पूरी जिंदगी शिकायत ही करते रह जाते हैं। **'कभी किसी को मुकम्मल जहाँ नहीं मिलता। कहीं ज़मीं तो कहीं आसमां नहीं मिलता।'** मानव जीवन के सच को बयां करती ये पंक्तियां हमें पॉजिटिव बने रहने और जीवन के हर पल को आनंद से जीने का मार्ग दिखाती है। **मनुष्य जीवन कर्म-प्रधान है। कर्म का कोई विकल्प नहीं है, न ही हो सकता है।** हां, हर व्यक्ति के कर्म करने का माध्यम और उद्देश्य अलग-अलग है। कोई दिमाग का इस्तेमाल ज्यादा करता है तो कोई शरीर का। किसी को नाम-शोहरत चाहिए तो किसी को खूब धन-दौलत और किसी को दोनों। लेकिन बिना मेहनत के जीवन में कोई भी सफलता नहीं मिलती है। परिस्थितियां कभी अनुकूल तो कभी प्रतिकूल कुछ भी हो सकती है, क्योंकि मनुष्य का जीवन परिवार, दोस्त, पैसा, धर्म, जाति आदि कई कारकों पर निर्भर करता है और इतने कारकों पर हर पल नियंत्रण संभव नहीं है। लेकिन जिसने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हार नहीं मानी वही जीवन-समर में विजयी होता है और सिकंदर कहलाता है।

पूरी दुनिया ऐसी कहानियों से भरी पड़ी है जिन्होंने कर्म-पथ पर चलते हुए सबके लिए मिसाल पेश की। प्रसिद्ध मीडियाकर्मी ओपरा विनफ्रे, प्रसिद्ध लेखिका जे के राउलिंग, एप्पल के फाउंडर स्टीव जॉब्स, अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन, भारत रत्न अब्दुल कलाम, क्रिकेटर महेंद्र सिंह धोनी, फिल्म एक्टर रजनीकांत जैसी शख्सियत कुछ उदाहरण मात्र हैं। इन सब ने अपने जीवन के सफर में आए विपरीत परिस्थितियों को अपने मार्ग का बाधक नहीं बनने दिया। उससे लड़े और सफल हुए। सभी सफल व्यक्ति की कहानी यह बताती है कि वे आत्मविश्वास से लबरेज थे। उन्होंने स्वयं पर भरोसा किया, मेहनत की और कठिनाइयों से लड़ते हुए हर दिन अपने को बेहतर बनाने में लगे रहे। उन्होंने चुनौतियों को अवसर के रूप में लिया और समयानुकूल तकनीकी, कौशल, बुद्धि - विवेक का इस्तेमाल करते हुए कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की।

मानव जीवन के संबंध में जब हम बात करते हैं तो कुछ तथ्यों पर गौर करना जरूरी है। पहला पृथ्वी पर हर मनुष्य की मृत्यु तय है और दूसरा हर व्यक्ति को बिना किसी भेदभाव के प्रकृति ने चौबीस घंटे दिए हैं। मानव जीवन की सफलता और असफलता की कहानी

इसी चौबीस घंटे के इस्तेमाल करने की कहानी है। हर व्यक्ति का जन्म कहां होगा, किस परिवार में होगा यह नियति तय करती है। जन्म के समय की सामाजिक, आर्थिक परिवेश पर मनुष्य का कोई नियंत्रण नहीं है, लेकिन उसके बाद की कहानी व्यक्ति स्वयं लिखता है। जो व्यक्ति अपने सामाजिक और आर्थिक हैसियत का रोना न रोकर उपलब्ध संसाधनों और समय का अधिकाधिक इस्तेमाल करते हुए अपने जीवन की समस्याओं को सुलझाने में लगा रहता है, वह जिंदगी को जीता भी है और जंग भी जीतता है। **जरूरी नहीं कि उसे मनचाही सफलता मिल ही जाए, लेकिन उन सपनों को पूरा करने का सफर व्यक्ति को अनुभवी, दृढ़निश्चयी और आत्मविश्वास से लबरेज़ करता है।** ऐसा इंसान जीवन के हर पल का आनंद उठाता है।

गीता में कहा गया है कि कर्म करो लेकिन फल की इच्छा न करो। मेरा मानना है कि यह सिद्धांत सुखी जीवन का सूत्र है। इसे ऐसे समझ सकते हैं कि जीवन गिफ्टेड है। अभी तक ऐसी कोई संस्था सरकारी या गैर सरकारी, तंत्र-मंत्र, टेक्नोलॉजी, दवा आदि नहीं बनी है जो हमारे जीवन की गारंटी दे सके। किसी भी व्यक्ति का कोई भी पल उसका आखिरी पल हो सकता है। एक रिपोर्ट के अनुसार पृथ्वी पर प्रति मिनट लगभग 105 व्यक्ति की मृत्यु होती है। स्वस्थ से लेकर बीमार सभी प्रकार के लोग हर पल जीवन की जंग हारते हैं। चूंकि हम मृत्युलोक जाने वाले हर व्यक्ति को नहीं जानते हैं इसलिए हमें अपने आसपास का जीवन बड़ा सामान्य लगता है। वस्तुत: **अगर हम जीवित हैं तो वह चमत्कार है।** इस चमत्कार करने वाले को ही लोग राम, कृष्ण, अल्लाह, नानक, बुद्ध आदि के नाम से पूजते हैं। **घर से सुबह निकल कर शाम को सही सलामत घर लौटना, रात में सोने के बाद सुबह स्वयं के साथ सभी बंधु-बांधवों को नार्मल पाना ईश्वर का चमत्कार है।** स्पष्ट है ऐसे अनिश्चित जीवन में कर्म ही एकमात्र विकल्प है जो आनंद दे सकता है और फल चूंकि कई कारकों पर निर्भर है इसलिए वह अनिश्चित है। इसीलिए फल की अनावश्यक चिंता नहीं करनी चाहिए।

हर व्यक्ति अनंत संभावनाओं का स्रोत है। कला, साहित्य, विज्ञान, खेल कोई भी क्षेत्र हो, वहां कोई-न-कोई व्यक्ति ही अपनी प्रतिभा से नित्य नई ऊंचाइयों को छू रहा है। **यदि हर व्यक्ति प्रत्येक दिन अपने ज्ञान, स्किल, टेक्नोलॉजी, व्यवहार को पिछले दिन की तुलना में ऐड ऑन करने की कोशिश करेगा तो निश्चित रूप से वह सफलता के नए आयाम को प्राप्त करेगा।** इससे उसका जीवन तो सार्थक होगा ही, परिवार, समाज और राष्ट्र का भी उत्थान होगा।

वैसे तरक्की का एक दूसरा रास्ता भी है जिसका इस्तेमाल आज के दौर में बढ़-चढ़कर किया जा रहा है।

स्वयं को यथावत रखते हुए अपने संभावित कॉम्पिटीटर के मार्ग में बाधा पैदा कर उसे आगे बढ़ने से रोकने की कोशिश करना; लेकिन यह मार्ग न केवल जीवन को नकारात्मक विचारों से भर देता है, बल्कि दूसरों को रोकने की कोशिश में बाकी दुनिया बहुत आगे निकल जाती है और वह स्वयं बीतते समय के साथ घोर कुंठा और अवसाद का शिकार हो जाता है क्योंकि जो उसे संभावित कॉम्पिटीटर दिख रहा होता है वह वस्तुत: उसकी ईर्ष्या और संकुचित सोच का परिणाम होता है।

सच्चाई यह है कि दुनिया में हर समय कोई-न-कोई तुलनात्मक रूप से धन-दौलत, नाम-शोहरत में किसी दूसरे को पछाड़ रहा होता है लेकिन ऐसे हर व्यक्ति की पहचान करना संभव नहीं है।

पते कि बात यह है कि **जब जीवन का ही भरोसा नहीं है तो उस जीवन से जुड़ी सफलता-असफलता की गारंटी का प्रश्न अपने आप बेमानी हो जाता है। ऐसे में जीवन में आनंदित रहने का एकमात्र उपाय है अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए समर्पित होकर निरंतर कर्म करते रहना।** लक्ष्य प्राप्ति के सफर का आनंद उठाते हुए निरंतर प्रयत्नशील रहना। यदि लक्ष्य प्राप्त हो जाता है तो सफ़र दूसरों के लिए मिसाल बन जाती है अन्यथा वह सफर आपको और अधिक बेहतर और अनुभवी इंसान बना देती है।

स्पष्ट है भाग्य का थ्योरी केवल शिकायत करने वाले लोगों का अस्त्र है। कर्म पर विश्वास करने वाले ज्यादा शिकायत किए बिना अपने पर भरोसा करते हुए निरंतर मेहनत करते रहते हैं। उनके लिए जिंदगी चलते रहने का नाम है।

- मृत्युंजय कुमार मनोज जी, ग्रेटर नोएडा नोएडा (उ. प्र.)

पत्रिका की प्रूफ रीडिंग करने के लिए
सॉनल जी ऑमर का धन्यवाद

3 वर्षगाँठ की बधाई

भारतीय परम्परा

की मासिक ई-पत्रिका के पुराने
सभी अंकों को देखने के लिए किताब
के आइकन पर स्पर्श करें !!

देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पठनीय-श्रवणीय-दर्शनीय है । पत्रिका में दिए गए ऑडियो-वीडियो का निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

8610502230
(केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका संदेश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं.पंजीकृत हो जाएगा।

आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को देवशयनी, हरिशयनी या पद्मा एकादशी कहा जाता है। हिंदू मान्यता के अनुसार, इन चार महीनों के लिए भगवान श्री विष्णु योग निद्रा में रहते हैं, जिसे हरिशयन काल कहा जाता है। इस दौरान विवाह जैसे कोई भी शुभ कार्य नहीं किए जाते हैं। कार्तिक मास में शुक्ल पक्ष की एकादशी, जिसे देवउठनी या हरि प्रबोधिनी एकादशी कहा जाता है, के दिन भगवान विष्णु की योग निद्रा समाप्त होती है और मांगलिक कार्यों का आरंभ होता है।

प्राचीन काल में साधु-संन्यासी इन चार महीनों में कहीं यात्रा नहीं करते थे। वे जहां होते थे, वहीं रुककर भगवान का भजन, कीर्तन और यज्ञ जैसे धार्मिक कार्य करते थे। इसलिए **चतुर्मास को धार्मिक कार्यों और साधना के लिए अति उत्तम माना जाता है,** लेकिन सांसारिक कार्यों के लिए यह समय उचित नहीं माना जाता।

धार्मिक मान्यता के अनुसार, इस समय में शादी, मुंडन, जनेऊ जैसे सांसारिक कार्यों को करने से भगवान का आशीर्वाद नहीं मिलता। यह समय संयम और भक्ति में बिताने का है।

व्यावहारिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो इन चार महीनों में वर्षा के कारण जलभराव होता है, जिससे किसी भी धार्मिक या मांगलिक कार्यों के आयोजन में कठिनाई हो सकती है। इसलिए इन महीनों में ऐसे आयोजन टालना उचित होता है।

यह भी माना जाता है कि चतुर्मास के दौरान धरती पर मौजूद सभी तीर्थ व्रज भूमि में आकर श्री कृष्ण की सेवा करते हैं। इसलिए **चतुर्मास के दौरान व्रज भूमि की यात्रा और दर्शन से सभी तीर्थों का पुण्य प्राप्त हो जाता है।** इस अवधि में तीर्थयात्रा करना हो तो व्रज भूमि की यात्रा सर्वोत्तम मानी जाती है।

देवशयनी एकादशी में भगवान विष्णु की विशेष पूजा और व्रत रखा जाता है, जिसमें फलाहार ग्रहण किया जाता है।

– रुचि गोस्वामी जी, बीकानेर (राज.)

जाने पूजा की विधि और देवशयनी एकादशी की कथा –

WWW पूरा पढ़े

MX CREATIVITY
Brand Creation & Digital Marketing

LOOKING FOR CREATIVE TALENTS?

"We Love Being Creative
You Love Results
So We Focus On Both"

WHY YOU NEED US?
WE DESIGN YOUR DREAM.....

Unleash creativity beyond limits with our innovative solutions at MX Creativity. Where ideas take flight, and visions come to life, we redefine possibilities in the world of design and innovation.

WEB DESIGN & DEVELOPMENT

Elevate your online presence with our expert Web Design and Development services – where innovation meets seamless functionality for a captivating digital experience.

APPS DESIGN & DEVELOPMENT

Transform ideas into interactive reality with our cutting-edge mobile app development. Amplify your reach and engagement through strategic marketing that propels your app to success in the digital landscape.

PRINT DESIGN & BRAND IDENTITY

Bring your brand to life on paper with our dynamic print media solutions. Elevate your identity through impactful branding that leaves a lasting impression in the tangible world.

www.mxcreativity.com
info@mxcreativity.com

Get In Touch Now..!
+91 8080 5187 45

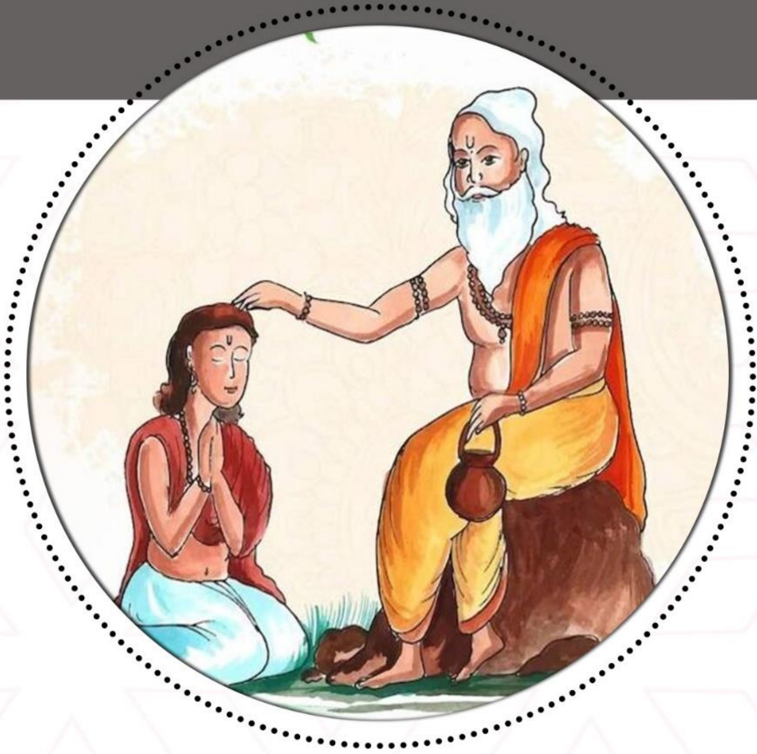

गुरु पूर्णिमा का पर्व हर साल आषाढ़ मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन का विशेष महत्व है क्योंकि यह गुरु के प्रति आभार व्यक्त करने का दिन होता है। **भारतीय संस्कृति में गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान स्थान दिया गया है।** गुरु अपने शिष्यों को अज्ञान के अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश में लाते हैं।

गुरु पूर्णिमा के दिन शिष्य अपने गुरु के चरणों में वंदना करते हैं और उनसे आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। इस दिन को महर्षि वेद व्यास की जयंती के रूप में भी मनाया जाता है, जिन्होंने वेदों का संकलन और महाभारत की रचना की थी।

इस दिन को मनाने का उद्देश्य गुरु-शिष्य परंपरा को मजबूत करना और गुरु के प्रति श्रद्धा और सम्मान प्रकट करना है। विभिन्न शिक्षण संस्थानों और धार्मिक स्थलों पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जहां गुरु की महिमा का गुणगान किया जाता है।

गुरु पूर्णिमा का पावन दिन,
ज्ञान का दीप जलाए,
गुरु के चरणों में शीश झुका,
हर शिष्य मस्तक नवाए।

गुरु हैं ज्ञान के सागर,
सच्चा मार्ग दिखाएं,
अंधकार मिटाकर जीवन में,
सत्य का प्रकाश फैलाएं।

गुरु के बिना अधूरा जीवन,
सच्ची राह न पाएं,
गुरु का आशीष पाकर ही,
जीवन सफल बनाएं।

गुरु पूर्णिमा का ये पर्व,
श्रद्धा से मनाएं,
गुरु की कृपा से ही हम,
सच्ची मंज़िल पाएं।

गुरु पूर्णिमा का यह पर्व हमें याद दिलाता है कि जीवन में सच्चे गुरु का मार्गदर्शन कितना महत्वपूर्ण होता है। गुरु के आशीर्वाद से ही हम जीवन में सफलता और समृद्धि प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए, इस दिन को पूरे उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाना चाहिए।

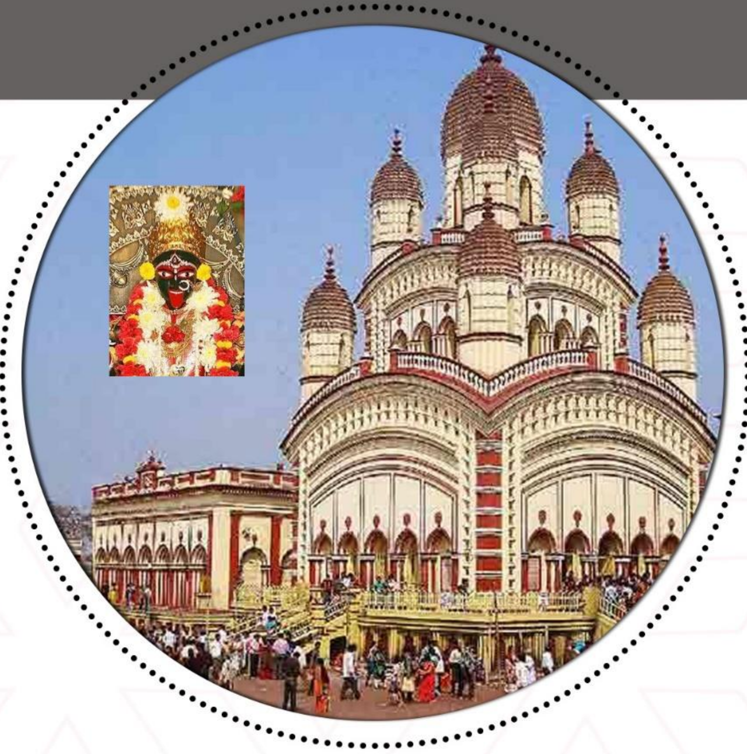

विश्वास, श्रद्धा और शक्ति की जीवंत स्थली : दक्षिणेश्वर काली मंदिर

मैं यह जानती थी कि दक्षिणेश्वर काली मन्दिर एक आध्यात्मिक व ऐतिहासिक महत्त्व वाला प्रसिद्ध काली मन्दिर है, साथ ही यह कोलकाता का एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और धार्मिक केंद्र भी है। यह मन्दिर दार्शनिक व धर्मगुरु, स्वामी रामकृष्ण परमहंस की कर्मभूमि भी रहा है, जहाँ उन्हें काली माँ के साक्षात दर्शन हुए थे। मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि मैं इस पवित्र स्थान के दर्शन करूँगी। इस कोलकाता यात्रा की योजना बनाते हुए और यहाँ आकर भी हमारे मन में इसका स्मरण नहीं था, पर कहते हैं न कि सौभाग्य के सौ द्वार होते हैं।

आज हमारा भाग्य प्रबल था, इसीलिए हम तेज गर्मी की उपेक्षा करके 3.15 बजे टैक्सी से दक्षिणेश्वर के लिए रवाना हो गए क्योंकि मंदिर के खुलने का समय प्रातःकाल 5.30 से 10.30 तक और सांध्यकाल में 4.30 से 7.30 तक है। हमें पहुँचने में लगभग 1.30 घंटे का समय लगेगा। सड़क के दोनों ओर फूलों से लदे वृक्ष हवा के संग नृत्य कर रहे थे। हम अनुभव कर रहे थे कि ग्रीष्मकाल के आगमन के साथ ही प्रकृति के सौंदर्य में एक नया उत्कर्ष आ जाता है। यह समय सिर्फ गर्मी की चरम सीमा पर पहुंचने का संकेत ही नहीं देता है, बल्कि प्रकृति की विविधता और समृद्धि को भी उजागर करता है। ग्रीष्म के आतप में तपकर प्रकृति के विविध रंग समृद्ध हो जाते हैं, निखर उठते हैं। पलाश के लाल फूल, गुलमोहर के लाल और नारंगी तथा अमलतास के सुन्दर-सुन्दर पीले झूमर की शोभा देखते हुए ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे प्रकृति सौंदर्य का उत्सव मना रही हो। फूलों का सौंदर्य हमें भी मंत्रमुग्ध कर रहा था, हम गर्मी की प्रचंडता को बिसर गए थे।

दक्षिणेश्वर काली मंदिर उत्तरी कोलकाता के बैरकपुर (दक्षिणेश्वर) में हुगली नदी के किनारे विवेकानंद सेतु के छोर पर स्थित है। इस मंदिर में माँ भवतारिणी की मूर्ति स्थापित है. इन्हें माँ काली का रूप माना जाता है। बहुत ही भव्य और सुंदर भवनों से शोभित यह मंदिर लगभग 25 एकड़ में फैला हुआ है। **देश-विदेश से माँ काली के उपासक और स्वामी रामकृष्ण परमहंस तथा स्वामी विवेकानंद के शिष्य यहाँ उपासना तथा दर्शन करने आते हैं।**

हमारी गाड़ी नए कोलकाता की चमचमाती चौड़ी सड़कों, हावड़ा ब्रिज, आकर्षक ऊँची इमारतों और बाजारों को पार करते हुए अब व्यस्त शहर की भीड़, बाजार और अपेक्षाकृत संकरे रास्ते को पार करते हुए मंदिर से केवल 15 मिनट दूर थी। सूर्य की किरणें वातानुकूलन को परास्त करने वाली अपनी प्रचंडता को छोड़ चुकी थीं। अब उसकी रोशनी हमारे मन में ऊर्जा का संचार कर रही थी। गर्मी से परेशान हम रोज सूर्यास्त की प्रतीक्षा करते हैं पर आज लग रहा है कि सूर्यास्त देर से हो ताकि हम दक्षिणेश्वर मंदिर के शांति से दर्शन करके वेलूर मठ भी जा सकें।

दक्षिणेश्वर का भव्य और मनोहारी भवन जलती हुई जमीन पर हमारे पैरों में गति भर रहा था। अति विशाल, सजीला हरित और शांत परिसर हमारे मन में पवित्र भाव भरने लगा। परिसर में श्रद्धालुओं की संख्या देखकर लगा कि मंदिर में काफी भीड़ होगी ।

हम मुख्य दक्षिणेश्वर काली मंदिर की ओर बढ़े। भक्तजन धूप और गर्मी की परवाह किए बिना अनुशासित और शांत पंक्तिबद्ध खड़े थे - न कोई धक्का-मुक्की, न किसी तरह आगे बढ़ने की कुलबुलाहट। परिवेश का प्रभाव मन की सारी उद्विग्नता को शांत कर रहा था। कतार निरंतर बढ़ रही थी। हम जितना आगे बढ़ रहे थे, लाइन पीछे भी उतनी ही लंबी हो रही थी।

सभी का मन भक्ति भावों से सराबोर था। मैं भी मन ही मन - **"ॐ जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते।"** का अनुकीर्तन कर रही थी। गर्भगृह के सम्मुख खड़ी मैं अति रोमांचित हो रही थी। अनुपम सौंदर्य, तेज और वैभव से दैदीप्यमान काली माँ की प्रतिमा ने अवाक् कर दिया। ऐसा प्रतीत हो रहा था देवी माँ की करूणा और दिव्यता चारों ओर बरस रही है। **माता चाँदी से बनाए गए सहस्र पंखुड़ियों वाले कमल पर, शस्त्रों सहित खड़ी थीं, भगवान शिव के ऊपर उनका एक पैर था।** पुष्पों से की गई अद्वितीय सज्जा प्रतिमा की श्रीवृद्धि के साथ ही मंदिर को पवित्र सुवास से भर रही थी।

खास बात यह थी कि यहाँ न पुजारी और न कोई व्यवस्थापक /स्वयंसेवक किसी को आगे बढ़ाने वाला नहीं था। सब स्वप्रेरणा से चालित था। हम बहुत ही शांति पूर्वक दर्शन-आराधन कर आनंद का अनुभव कर रहे थे। **मंदिर में न कोई पंडित -पंडे का पूजा करवाने का आग्रह, हस्तक्षेप नहीं, बहुत ही उत्फुल्ल वातावरण।** परिसर के चारों ओर ऊँचे-ऊँचे वृक्ष हवा से अठखेलियां करते झूम रहे थे।

हरीतिमा के अतिरिक्त यहाँ खास आकर्षण यह है कि इस मंदिर के पास पवित्र गंगा नदी जो कि बंगाल में हुगली नदी के नाम से जानी जाती है, बहती है।

हम मंदिर के 12 गुंबद देखकर आनंदित हो रहे थे। **इस विशाल मंदिर में भगवान शिव के बारह मंदिर स्थापित किए गए हैं।** मुझे लगा कि ये 12 ज्योतिर्लिंग के प्रतीक हैं। पर वहाँ ऐसा कोई उल्लेख नहीं था।

दक्षिणेश्वर काली मंदिर देखने में जितना मनोहारी है, इसका इतिहास भी उतना ही रुचिकर और रोमांचक है, यह हमने वहाँ एक भक्त से जाना। ये महोदय मंदिर के निकट ही निवास करते हैं और प्रतिदिन दोनों समय दर्शन और मंदिर की व्यवस्था में सहयोग करने आते हैं।

उन्होंने हमें बताया कि **एक दन्तकथा के अनुसार इस मंदिर के निर्माण की प्रेरणा स्वयं माँ काली ने रानी रासमनी नाम की एक बहुत ही धनी अपनी भक्त को स्वप्न में प्रकट होकर दी थी।** रानी रासमनी के मन में सभी तीर्थों के दर्शन करने का ख्याल आया। उन्होंने निश्चय किया कि वह अपनी तीर्थ यात्रा की शुरुआत वाराणसी से करेंगी और वहीं रहकर देवी का कुछ दिनों तक ध्यान करेंगी।
उसी रात देवी ने उन्हें स्वप्न में आदेश दिया और कहा कि **"वाराणसी जाने की कोई जरूरत नहीं है, तुम गंगा के किनारे मेरी प्रतिमा को स्थापित करो। एक सुंदर मंदिर का निर्माण करवाओ। मैं उस मंदिर की प्रतिमा में खुद प्रकट होकर श्रद्धालुओं की पूजा को स्वीकार करुंगी"।**

रानी ने माता के आदेश को शिरोधार्य करके सन् 1854 में नवरत्न की तरह निर्मित 46 फुट चौड़े तथा 100 फुट ऊँचे इस शक्तिपीठ का निर्माण करवाया।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस को माँ काली ने इसी मंदिर में साक्षात दर्शन दिए थे। रामकृष्ण परमहंस को विश्वास था कि कठोर सधाना से मां काली का साक्षात्कार किया जा सकता है। वे पूरी निष्ठा के साथ मां काली की पूजा-अर्चना किया करते थे। **इनकी भक्ति को देखते हुए इन्हें दक्षिणेश्वर काली मंदिर का मुख्य पुजारी नियुक्त किया गया।** रामकृष्ण परमहंस भूखे-प्यासे सिर्फ मां काली को निहारते रहते, मां काली के सामने रोते रहते, उनकी तड़फ वैसी ही थी जैसे कोई बालक अपनी मां से बिछुड़ गया हो। वे माता की मूर्ति को पकड़ कर यही कहते रहते थे कि वे उन्हें अपना असली स्वरूप दिखाएं, दर्शन दें।

लम्बे समय तक अपनी माँ से दूर रहते हुए परमहंस बेहद निराश और हताश हो गए और **एक दिन काली माँ के चरणों में बैठकर खड्ग से अपना सिर काटने के लिए उद्यत थे कि स्वयं मां काली ने उनका हाथ पकड़ उन्हें रोक दिया। उस दिन के बाद से जब तक वे जीवित रहे तब तक मां काली उनकी माता और सखा के तौर पर उनके साथ रहीं।**

मेरी दृष्टि में इस मन्दिर की प्रतिष्ठा और

प्रसिद्धि का प्रमुख कारण है, स्वामी रामकृष्ण परमहंस से इसका जुड़ाव। यह पवित्र स्थल वर्षों तक स्वामी जी की साधना स्थली रहा है।

मंदिर के मुख्य प्रांगण के उत्तर पश्चिमी कोने में रामकृष्ण परमहंस का कक्ष आज भी उनकी ऐतिहासिक स्मृति के रूप में संरक्षित है।

मैंने इन महाशय से पूछा कि क्या यह मंदिर शक्तिपीठ है? 51 शक्तिपीठों की सूची में तो इसका उल्लेख नहीं है? कोलकाता के कालीघाट का है। कहा जाता है कि वहाँ माता सती के दाँये पैर की अंगुलियाँ गिरी थी। ये महाशय मेरे प्रश्न से कुछ नाराज दिखे, किंतु शांति पूर्ण स्वर में बोले - **"यहाँ माता जीवंत रूप में निवास करती हैं। स्वामी जी का जीवन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।** यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं पर माँ की असीम कृपा बरसती रहती है। आपको विश्वास करना चाहिए।"

वे भावविभोर हो कह रहे थे **"इन मंदिरों में अनेक रहस्य भरे हैं। यहाँ कृष्ण मंदिर में खंडित मूर्ति पूजित है, जबकि सामान्य मान्यता के अनुसार खंडित मूर्ति रखना अशुभ माना जाता है ..."।**

मैंने उन्हें बीच में ही टोकटे हुए पूछा कि फिर यहाँ ऐसा क्यों है?

उन्होंने बताया कि स्थापना के समय सेवकों के हाथ से श्री कृष्ण की मूर्ति गिर गई थी और खंडित हो गई। इस पर घबराकर रानी ने सभी पंडितों की सभा बुलाई - पंडितों का मत था कि इस मूर्ति को विसर्जित करके दूसरी मूर्ति स्थापित की जाए। रानी स्वामी रामकृष्ण परमहंस पर अधिक विश्वास रखती थी तो उन्होंने उनसे उनका मत पूछा।

रामकृष्ण परमहंस ने उनसे जो कहा वह अद्भुत और मानवता का पाठ पढ़ाने वाला था। उनका कहना था कि **"जब घर का कोई सदस्य विकलांग हो जाता है या माता-पिता में से किसी एक को चोट लग जाती है तो क्या उन्हें त्याग कर नया सदस्य लाया जाता? नहीं बल्कि उनकी सेवा की जाती है।"**

उनका समाज को अनुपम संदेश देता यह मत रानी को उचित लगा और उन्होंने कहा कि "यही मूर्ति स्थापित होगी और हम इसकी अच्छे से देख रेख करेंगे" इस तरह यहाँ समस्त मंदिरों में भाव जीवंत है।

भावों का एकमात्र आधार श्रद्धा और विश्वास है। हम उनके अखंड विश्वास और श्रद्धा को नमन करते हुए आगे बढ़ गए, हमें वेलूर मठ का आकर्षण खींच रहा था।

- डॉ स्नेहलता श्रीवास्तव जी, इंदौर (म. प्र.)

सावन का महीना आया, खुशियों की सौगात लाए,
हरियाली की चादर ओढ़े, धरती मुस्काए।

झूले पड़े पेड़ों पर, रिमझिम बारिश आए,
मोर नाचे बगिया में, सबके मन को भाए।

भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

www.bhartiyaparampara.com